

DPN S632

Title: कृष्णभक्ति कथा / KRṢṢNA BHAKTI KATHĀ

Run. No. 6323

Cat. No.

Micro. No.

Subject ^{धार्मिक कथा} Religious narrative
(narrative)

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपाली भर्षा, हिन्दुत रूढ ५६

Size in cms. 11.5 x 10.5

Folios 39

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

~~Beginning and~~ End folia are missing. ^{meaning.} रम्भुनेया के मगः।
Sanskrit text with Nepali.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water / worm - holes.

Beginning, colophon, post-colophon :

श्रीगणेशाय नमः काष्ठोक्तः ॥ ॥ प्रह्लाद सुकृतं पाश्चात् पुण्डरीक ... रिरव
शौनके मिथ्यामत्ता ॥

centimeter 5

10

15

20



centimeter 5

10

15

20

ॐ गंगाधाराय नमः ॥ पारोक्ष
वाचः ॥ ॥ प्रस्तावः ॥ यथा
सरपूरदरिक व्याहृत्यैव
सुकशैलकभिषाकाद्या ॥
हृक्सांगदार्जुनवद्विद्योक्
मिथुनाद्यावितानेन परम
मागवतानेन ॥ मि
थुनाद्यावितानेन ॥ मि
थुनाद्यावितानेन ॥ मि

उक्ताः शान्तकामिभ्यः आदि
मयोः सुखसांगदः अर्जुन
वासेः विमिषनः यतिम
नाभगवतीहोः सुहृकोम
यागसाहोः यतिजनात्मा २
नमस्कारः ॥ हुगलोमद्व
नोवाचः ॥ धर्मो विवर्धते
जुषिः स्थिरचित्तैर्नृणां ॥ प्राप्
प्रणवलिखते ॥ दक्षिणैर्नृणां

५ ह्यति
 रात्रुविनश्यति धनं जय किम
 नेनः माद्रैशुभो कठयतां भ
 वति रोगा ॥ २ ॥ शुद्धिश्च रूकोना
 मालियाधमं चर्चुः भीम्
 सनकोनामलियापायनाश
 हुं हृत् अर्चुकोनामालि
 यार्चुकोनामालि हुं हृत् अर्चुकोनामालि
 हुं हृत् अर्चुकोनामालि हुं हृत् अर्चुकोनामालि
 हुं हृत् अर्चुकोनामालि हुं हृत् अर्चुकोनामालि

वाविगतराजपराजनाराय
 रासुरगुरुः सततस्मरति ॥ ध्या
 नेन तेन हत किल्बिष चेन तेन स्ति
 मातुपयोधर रसं न पुन पिबन्ति
 ॥ ३ ॥ मनुष्य हरु संसारमान
 भयाकाइश्वरः मनुष्य कनजा
 त्या देवताका गुरुः नारायण क
 वः ज्ञे सदा स्मरणा गर्हन्
 तिनः ईश्वरको व्या न गनीले

३
 निस्या विभया का यमि फरि
 आभा को दू डक नरि पुनेन
 रु फरि जन्म हु देन भन्ना हो
 ॥ इन्द्रो वाचः ॥ नारायणो ना
 मन रो रा राणाः प्रसिधौ
 किरि तपु थि व्या ॥ ३१ ने क
 जन्मा ॥ जन्म पाप संचयः ॥ ३२
 न से स स्मृत मात्र ये वः ॥ ३३
 नाशय न जे द न प ॥ थि व म

न भया का मनुष्य का चारु न
 वे रे जन्म ले गरि स न य ध्या को
 पाप क न नारायण न भया का
 ने हर ई द द न ना आ फे चा
 रथ द न्या ॥ न वि स्थि रे वाचः
 म द्य स्या म य न को श्रे य वा
 शं की वत्सा वं को सु भो मा मि
 तां ग ॥ पु र्षि पि तं यू र्ध्व रि का
 य ता र्थं वि व सु व न्दे स वे लो के

20
 15
 10
 5
 Centimeter

कनाथां॥५॥ मयको जसो
परी भयाकाः पीताम्वरुवस्त्र
भयाकाः छातिमाश्रीवत्सको
चिंद भयाकाः कोसुभमारा
जेलोइरुषाकाः गलीअतीते
जभयाकाः घुस्त्रभयाकाक
मलजोसोविस्तारतेत्रभया
काः सवैलोककां नाथभया
काश्रीविस्तुकेननमरकारण

हुभनिजधिसिधरलावेति
गदीभया॥ नीमसेनोवान्चः
जलोद्यमग्रासचरचरधर
विखानकोद्याखिलाविश्व
मुर्तितां॥ समुद्रुतायेनकर
हस्तिपरासमेलायेभुमग
वान्प्रसिदतु॥६॥ जेसका
शमुहमावुद्याकिचलत्या
नवलत्याजातलोनुकेभया

८५
 किं पृथिविकं न विश्वं मूर्ति
 भया का बराह अवतार लोके
 न ज उ नु विष्णु लो आ फ ना डी
 त को वु दाले पृथिवी उ था इ
 ल्या य छ व नि रौ निष्पु प्र सं
 न ह व म भानि भी म स्म न ले नं
 दा स या म अर्जुनौ वा नः अ वि
 न्य म व न्न म नं न म व्य सं वि मुं
 प्र मुं भा वि न वि श्व भा न न भ ॥

८६
 त्रैलोक्य विस्तार विचार कार
 कं हरिं प्रपन्नो स्थिति महा
 त्मना ॥ ७ ॥ चित्त नाग नु नु
 न्या न दे रिव त्या अ नै लि नु न
 स का का स वै कु रा मा सा म
 थं सं सार क न पा ल ना ग न्या
 त्रै लो क्य का वि स्तार वि चार ग
 न्या भ क्त क न भो षा ग ति दि न्या
 य सा हरि क न सर रा गं नु ॥

नकुलोवाचः॥ आदुगभनम
धसाका लपासालुवधामय
दिवकुलबिहिनेजायनेयध
कीटे॥ कौभरानमगत्वाध्याय
नेचोत॥ पुनः॥ भमभवतुहाद
म्याकेहावेभक्तिरेका॥ ७॥ का
लयाभलेवाधिकनूनरुमा
गसापनिःकुलहीनभसापनी
प्रीतिकीदमाजनयभयापानक

मलाजनूभयापनिःभेरोमन
भाकेरावकोभक्तिगानुकाहन
जावसु॥ सहदेवीवाचः॥ नस
जशेवराहस्यविहारातलोमज
मप्रनाभयेप्रकुर्वन्तिनेषाम
जिनमानमः॥ ८॥ वराहकारुप
कनधारणागयाकावदेते
जभयाकापरमेश्वरकोप्रणा
मजोगर्धनृतिनिकोपेति

३
भक्तस्कारगुह्यं कृत्यवाच्यं
स्वकर्मफलनिर्दिष्टायां
योगानिवृत्ताम्यहम् तस्य
तस्यापि केशत्वभक्तिदे
छिन्ति ॥ १० ॥ हे परमेश्वर
आफ्रकर्मकोफललेजउ
रुजउरुजोनिमाजाउलात
सतमेजोनिमातयाभक्ति
हृदये ॥ सुभद्रोवाचः ॥

केशरता कृष्णमनुस्मरति
रात्रौ च कृष्णपुनरुत्थिता
येति निश्चये ह्यप्रविश
ति कृष्णहविर्गन्धानाम्
उद्वृत्तासौ ॥ ११ ॥ कृष्णसी
गङ्गातीभयाकोरुः तिष्ठ
मैकं तस्यैव केशरिगत्र
मायति सैव कृष्णं तिष्ठ हृद
दि कृष्णे मायस्य कृष्णं जसै

५
नीललेहोमंगन्याकोअग्नि
माश्रित्याहूनसोपदीपत्य
वाचो॥ कीटेषुषक्षुम्भ
जेयुःसरिश्रयेषुःरक्षाधिक
सांचमनुजेष्वप्ययन्नलन
॥ ज्ञानंत्वमेभवतुकेशव
त्विमसादात्वयैवमाकर
चत्वाव्याभिचारिणीचः॥
॥ १॥ किरायेष्टिःमृगः

२५
मध्यःरक्षसःपिशाचःमनु
व्ययेतिमध्यजाहाजाहमेरे
जन्महोलाताहाताहमेरेकेश
वतिमिमहामेरिभक्तिःलोगो
सुजसोपतिवतास्त्रिकोम
क्तिःआफ्रापुर्व्यमालाग्न
मे॥ शुभद्रोवाचः॥ एकोपि
हृद्यस्यहृतप्रणामोदशम
मेधावमर्थेनतुल्य॥ ५॥ दशा

श्वमेविपुनरिति जन्म कृष्ण
प्रणामिन पुन भवाय ॥ १२
कृष्णको नाम येक पद टम
न्या कोर अश्वमेध यज्ञे
शपल टम न्या को वरेवर
हु दे न जज्ञग न्या को ले जे
न हु छः कृष्णको नाम ले
हु दे न ॥ ३ ॥ अभि मत्सु रुचा च
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे

गोविन्द गोविन्द मुकुन्द क
ष्ण ॥ गोविन्द गोविन्द रथाग
या गोः गोविन्द गोविन्द नमा
त्यजेथा ॥ १४ ॥ हे गोविन्द
हे हरे हे मुकुन्द हे कृष्ण
हे रथागयागे म क नर
क्षा करे ॥ धृष्टद्युम्नो वा
च ॥ श्री राम नारायण नवा
मुदेव गोविन्दैव कुरु

१०
मुकुन्दलक्ष्म श्रीकेश
वानंतनृसिंहविस्मोह
मात्राहिसंसारभुजंगद
ष्टा॥१५॥ हेरामहेवासु
देवहेनारायणहेगोवि
न्दहेवैकुण्ठहेकेशव
हेअनेनहेनृसिंहहेवि
स्मोमकनसंसाररूपिमर्ष
लोनिमिराध्याकादेवि

रक्षागरासात्पुकिरुवा
चमाअप्रमेयहरविस्मो
रुल्लादाभोदराच्युत॥ गो
विन्दानेनसर्वेशवासुदेव
नमोस्तुते॥१६॥ प्रतापगने
नसकित्याहेहरेहेविस्मोहे
दामोदरहेअच्युतहेगोविन्द
हेअनेनहेसर्वेशहेवासुदे
वतिमिलाइनमाकारगछु॥

उधरौ वाचः ॥ १ ॥ वा सुदेव
 परित्यज्य यो अदेवमुयासि
 ते ॥ तृषि नो जाहूवी तीरेक
 पंखनति दुमति ॥ ११ ॥ वा
 सुदेव कं वछोदि जा अर्को
 देवता कने मांछः न्यो कसे
 हो भन्या पानिषा नु लाई ग
 गा को तीर भाव सि क वा व
 निरह त्या ज सो हो ॥ धो सो

वाचः ॥ अया सभी पेस य
 ना स न स्थे दि वा च श त्री च
 य था वि ग द्द ता ॥ य य सि
 कि श्री त सु क ते क ते म या
 ज ना द न स न क ते न तु य
 तु ॥ १८ ॥ जल का सी म प मा
 तु त्या मा व म्या मा दी न रा जी
 मा हि री मा मै ले ज उ न्ध र्म
 ग न्या को व त्प मै क्ष मै ले ज

नार्हति संतुष्ट हृदयं संतु-
 यो वाचः॥ आर्तो विषर्तो
 सिधिलाश्च भीताद्योरे
 पुण्याद्यादिषु वर्तमानाः॥
 संकिर्त्तनं नारायणसद्व्यमानं
 विमुक्तदुःखासुखिनो भव-
 त्ति॥ १९॥ दुःखिनिर्वहणाय
 व्याघ्रादिदं नालेदराया
 कोनाश्च नृप नारायण

भन्यामानले सुषिदं च
 ॥ २० ॥ अकुरो वाचः॥ अहमास्मि
 नारायणदासदासः दासस्य
 दासस्य च दासदासः॥ संकी-
 र्त्तनं नारायणशब्दमात्रं। वे-
 मुक्तदुःखासुखिनो भवन्ति
 ॥ २० ॥ श्रीनारायणकादास
 कादासतिनिकोपनिषत्
 पुः श्रीनारायणभन्याहुदि

सयुगाः पञ्चवाचिमुक्तं दुष्टं
विशद्यैवाचः॥ वासुदेवस्य
वेभक्ता साक्षात्तद्भुतमानसा॥
तेषां सस्यदासाहं भवेजन्म
शिजन्मसि॥ ११॥ वासुकाः
मक्तसा तस्ववावभयाः
श्वरेभाचिमुक्ता ग्याका जा
छन्ति तिनिका दासकोदा
सजन्मजन्मापः न पलाइ

हवस्य॥ भीष्म उवाचः॥
विपरीतैषु कलिषु परिक्षी
णेषु वधेषु॥ त्राहि मां कृप
या कृष्ण दारणागतवत्स
ल॥ १२॥ कोल उवाच॥ भयमा
वधुको नास भया प्राशरण
मा उवाचा काक नया शोना ग
यो हे परमेश्वर म क न १३॥
गरः॥ प्रोक्तो वाचः॥ ये ये हन्ता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 त्रैलोक्ये नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गता विष्णु पुरि प्रयाताः ॥
 शोयि देवस्यैव लेशानुल्यं
 ॥ २३ ॥ चक्रधारण गज्याका
 त्रैलोक्य कानाथ जनाहने
 लोज ३ न ज उ न देत्य मारिषा
 निप्रनि विष्णु पुर मा ग या
 देवता कारि स ले व र द या

जसो ह दोर हे ह न ॥ लुपा
 चा ज्योतिषा च ॥ म ज न्म न फ
 ल मि दं म धु कै ट भा रे म न
 पार्थ नी य म द नु य ह र द
 ए व ॥ त्व इ न्म भू त्य परि च
 र क न्म भू त्ये भू त्य स्य भू
 त्व इ ति मां स्म र लोक नाथ
 ॥ २४ ॥ मे रो ज न्म को फ ल ये
 ह म ले मा ग न्या ति मि ले दि

५५
 न्यासहि हो कौन त आचाक
 को चाकर भनि संकन व
 इहे मधु के ठ भ दै त्य कन
 मा न्याहि लोक नाथा ॥ ॐ
 श्वर था भो वाचः ॥ गोविन्द
 केशव जना देवा सुदेव
 दिव्येश विश्व मधुसूदन
 विश्वरूप ॥ श्रीपद्मनाभ
 पुष्पोत्तम पुष्करक्षः

नारायण चतुर्दिगन्त
 मोन मस्ते ॥ २५ ॥ हे केशव
 हे गोविन्द हे पुष्करेश हे
 नारायण हे मधुसूदन हे वि
 श्वरूप हे पद्मनाभ हे नृसि
 हति मिलोई त मस्कार गर्भ
 ॥ करेण वाचः ॥ नान्ये वद
 मिन सृ नो भिना धितया मी
 नान्ये स्मरा मिन भजा मिन

20

15

10

Centimeter 5

10

5

0

१६
चौश्रयागमे॥ भक्त्या त्वदीय
चरणं तु जमादरेण श्रीश्री
निवासपुरुषोत्तमदेहिहामं
॥२६॥ कसैकतभंतुसुनुचि
ताउनुससुनुभजुआभा
गनुकमेछेनभाकेलेस
आचरणकमलकोसेवाग
नीलाईसदाहुनपाउनु॥ध
तरायेवाच॥ नमो नमः

कारणवामनायः सारय
णायमितविक्रमायः॥ श्री
शङ्खचक्रासिगदाधराय
नमोस्तुतस्मैपुरुषोत्तमाय
॥२७॥ कैहिकारणलेवाम
न अवतारलियाकानारा
यणलाईवडोपणक्रमभ
याकाधनुचक्रगदालिया
कापरमेश्वरलाइनमस्का

२०॥ गौंधायुवाचः॥ त्व
 मेव माता च पिता त्वमेव
 त्वमेव विश्वं द्रवि त्वमेव
 त्वमेव वंशश्च सुरध्व त्वमेव
 त्वमेव सर्वं मम देव ॥
 २०॥ माता भर्ता पीता विश्व
 धन आश्रयः स्वसु सुखा
 परमेश्वरः सर्वभूतानां
 मित्रो अर्को देवता ॥ २० ॥

वाचः॥ यत्नश्चाच्युत गोविन्द
 माधवा न त्वं केशव ॥ कृष्ण
 विश्वो हृदयिकेशवासुदेव
 नमोस्तुते ॥ २० ॥ हे जेशोका
 २०॥ अच्युत गोविन्द मा
 धव अनन्त केशव कृष्ण वि
 भूति मिलाईत मस्कार
 गच्छ ॥ जय द्रथौ पाचः॥ न
 मस्तुभ्यं यदेनायकं करोते

५६
 तेशीक्तयः॥ योगेश्वराय यो
 गायात्वा महं सरणिगतः॥
 ३०॥ हे हृल देवता हे वंस्त
 हे अनंतशक्ति जस्का म
 याका योगीजनकाईश्वर
 लाई नमस्कार नम्रा सरण
 मा आई हृला दु॥ विकर्षो
 वाचः॥ हृला य वासुदेवा
 य देवकी नन्द नाथ च॥

नन्द गोपक माराय गोवि
 न्दाय नमो नमः॥ ३१॥ हृ
 ला वासुदेव देवकीकायु
 गे नन्द गोपका पुत्राई गो
 विन्द लाई नमस्कार गर्दु॥
 सोमदत्तो वाचः॥ नम पर
 मकल्याण नमस्ते विश्वाभा
 वना॥ वासुदेवाय शान्ताय
 यदुना पतये नमः॥ ३२॥

८) ८

हकल्यानदिन्यासंसारक
नपालरागर्ग्याहेतोसुदेव
शान्तमुनिभयाकाजडुवंसि
कोश्यामियलाश्रीकृष्णकन
नमस्कारगर्ह ॥ विराटुवाच
॥ नमोब्रह्मरायदेवायंगोब्राह्म
राहितायचः ॥ जगदुतायह
लायगोविन्दायनमोनमः ॥
३३ ॥ गाईवांभराहीनजर्ग्य

सुषदिन्याजगत्संसारकाही
नभयाकागोविन्दलाइनम
स्कारगर्ह ॥ शल्योवाचः ॥ अ
तसीपुष्यसंकासंणीतवास
शमच्युतं ॥ यनमस्यतिगो
विन्दनतेवाविद्यतेभयं ॥
३४ ॥ अतसीकापुष्यजसो
वर्गभयाकोपीतांवरवस्त्र
भयाकाकैलेयनिनासनहु

आगोविन्द कनजो नमस्का
 रगर्ध नृति निलाई के से दे
 वि भय छे न न॥ वल भवो वा
 च॥ कल कल कल कल लो नो म
 गति हंग गति भवः॥ संसार
 र्णव मय्यारण प्रसीद पुरुषो
 नो म॥ ३५॥ हे कल हे कल
 कया कर जस्की गति छे न न
 स्का गति दे उ संसार सभ

मातृ माकी मनुष्य लाई प्रेस
 मह वरु हे पुरुषो नमः॥ श्री
 कल उवाचः॥ कल कल कल
 कल नि यो मा स्मरति नित्य
 म॥ जल मिवा यथा मय न
 रका दुर्धर मय हम् ॥ ३६॥
 कल कल कल कल नित्य जज्ञे
 म कन स म्द न म्क न नर के
 माव स्या य नि उ द्धार ग दु न सो

^{३९}
 जलवाटो के मलका फुलनि
 स्कच्छतसे निस्का उन्धाहु ॥
 पुनरुन्मोवा चः ॥ सत्यं व्रवी
 मिमनुजा स्वयमुर्धवाहयो
 मां मुकुराडनरीसंहजनाद
 नेति ॥ जीवजयन्यनुदिनेम
 रणोरणोवाः पाषाणकाष्ठर
 दशायददाम्यभिस्तं ॥ ३७ ॥
 हेमनुष्यहोहातउथाइकन

मसवेलाईसाचो भंडजस्ते
 मन्यावेला मासं ग्राममाहेसु
 कुराडनरीसंह भनिमेरोना
 मकायाहृदिकाठधुंगासु
 न्यभयाकालाईयनिईक्षा
 गय्याकोदिहु ॥ ईश्वरोवा
 जः ॥ सकलारायणायुक्ता
 पुमांकल्यसतत्रयं ॥ गंगा
 दिसर्वनिर्धेयुक्तातोभवति

पुत्रकः ॥ ३८ ॥ रुके पल्ल
 मारयगां जश्ले भन्दन श्वा
 ईनिह सयकल्प संमगंगा
 दि सर्वे निर्धमास्मान्मगया
 नसो हृदः ॥ शुभो वाचः ॥ न
 ने वगंगा जमुना च न श्रुता
 शवरि सिंधु सरस्वती च न
 सर्वाणि तिर्था निवसन्ति तत्र
 यन्माच्युतो दारकठा प्रसज ॥

॥ ३९ ॥ नृजगा मापरमेश्वर
 की कठा हुं हन सजगा मा गं
 गा जमुना गोदा वरिसमुद्र
 सरस्वति सप्तम्युगा तिर्था आ
 ईव स्य ह्यन ॥ यशो वाचः ॥
 नरके पच्यमाने तय मेराप
 रिभा वस्यत ॥ किं त्वयाना ह
 र्चि तो देव के शवले शना स
 न ॥ ४० ॥ नरक मापदान ननुषे

२५
 लाई ज मरजा भंछ न के दो
 व को पूजा मरे एर स लोक
 छ गरि नर क मा प म्मा अब
 कर आले पु छि नर ॥ नार दो
 वाच ॥ न न्मा नर सह श्री रा
 न पो ध्यान म मा वि ना ॥ नर
 रां छि रा पा धारां ॥ छ छि म
 कि प्रजा प्थिने ॥ ४१ ॥

४ जारे ज न्मा मा ग म्मा कांत
 प म्मा ध्यान स मा धी ले पा प्थि
 म्मा का मनु य कि म ति क
 छ मा ला ग्ध न सह जे मा ल
 छि न ॥ प्र हा दो वा च ॥ ना ठ
 ५ यो नि स ह श्री सु य सु य सु व
 ६ जो स्य ह ॥ ती सु ती सु च ला म
 कि र चा ता स सदा त्वा रि ॥
 ४२ ॥ हे ना थ ज उ न्ज उ न्ज

२५
शानिमाजो उलातु सतस
योनिमातिभिलाई भेरिभ
क्ति लमजो सु॥ पुनप्रह्लादो
वाचः॥ याप्रितर विवेका
नो विषयेष्वनपाय शि॥
त्वा मनुस्मरत सा भहदया
ना परपर्यय ॥ ४३ ॥ पूर्वकी
प्रीती जसे विषये रहं दे त
से गरि हे पर मे श्वर मे रिपु

तिप निति मिभार हो सु॥ वि
श्वाभिन्नो वाचः॥ किं तस्य
दाने किं तिर्थे किं तपोभि
किं मंधरे ॥ यो नित्यं ध्याय
ते देवं तस्य यथा मननं न्यु
धी ॥ ४४ ॥ जज्ञेनाशयथा
को ध्यानं गर्ह्यते श्वा इदं न
तिर्थं तपस्या जज्ञेने के हि हु
दे न ॥ यमदग्नि रुवाचः॥

नित्यात्मैवो भवेत्तथा न
 त्वं श्री नित्यमंगलं ॥ येष्वा
 ह्निदस्थो भगवान् मंगल
 यंत नो हरि ॥ ४५ ॥ जस्का
 ह्दये मा मंगलस्थान भया
 मा परमेश्वर वस्त्वन्नति
 लाई नित्य उत्पन्न वस्त्वन्नित्य
 लक्ष्मीरहं वस्त्वन्नित्य
 माति निकाधर मा नित्यमंग

लपानिह वस्त्वन्न ॥ भारद्वाजो
 वाचः ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां
 कटस्तेषां पराजयः ॥ येष्वा मि
 त्यो वरस्थामो हृदयस्थो जना
 दन्तो ॥ ४६ ॥ जश्ने हृदयमाध्या
 नगरि परमेश्वर लाई रां वृ
 नंश्च लाई लाभ हृदयः जय हृदयः
 नश्च लाई जित्त कसे ले सग्देने
 नृप गौतमो वाचः ॥ गोकोटि

शनं ग्रहनेषु का सिः संकर प्र
 अगि यदि कल्प वासी ॥ यज्ञ
 युतं मेरु सुवर्णादा नं गोविन्दना
 मभर शो न तुल्यं ॥ ४७ ॥ कोटिगा
 इ दान गन्धा को जो फल द्रव्य
 नमा का सि दान गन्धा को प्रया
 गमाः माघ को सत्रा त्रिको दि
 न रत्ना न गन्धा को फल सु मेरु
 तुल्यः सुवर्णादा नः यति को ज्ञा फ
 ल द्रव्य सो फल गोविन्द भने ले पाई

जां द्वा ॥ ३ ॥ अग्निरुवाचः ॥ गोवि
 न्देति सदा स्तानं गोविन्देति
 सदा जयं ॥ गोविन्देति सदा
 ध्याने सदा गोविन्द कीर्तनं
 ॥ ४८ ॥ गोविन्द भनि स्तानं ग
 र्नु गोविन्द जपु गोविन्द ध्याने
 गर्नु गोविन्द को कीर्तन गर्नु
 सदैव ॥ पुन अग्निरुवाचः ॥ जेक्ष
 रं च परः वृक्ष गोविन्देति न अ

२५
 क्षरं ॥ न समा दुर्वारं न येन ब्रह्म
 भूयाय कल्पये ॥ ४५ ॥ गोवि
 तं भनितिल अक्षर परमेश्व
 रं हृत् जं श्लो गोविन्द मन्द
 ल्यो परमेश्वर माः मिलि जाह
 रु ॥ वादराय शिरुवाचः ॥ अ
 च्युत कल्प द्वेक्षो सोः अनन्त का
 मधेनवः ॥ चिन्ता मणि श्रु गो
 विन्दो हरि नामाति चिन्तये ॥

॥ ५० ॥ अच्युत भन्यां का कल्प द्वे
 क्षु हृत् कामधेनु अनन्त हृत्
 ज्या चिन्ता गो सोऽदित्या गोविन्द
 हृत् ईः तिन हरि का नाम कन
 चिन्ता ईवस्तु ॥ हरि रुवाचः ॥
 जयति जयति देवो देव कीनत्
 तोयः जयति यजति क्लृप्तो ह
 द्भिः वशप्रदीपः ॥ जयति जय
 ति मेघासामलको मलांगो

जयति जै अति पृथी भारणा
सो मुकुन्द ॥ ५५ ॥ हे देव को का
पुत्र हवि वंश कन प्रकाश गर्था
को मल सरीर भया का मुकुन्द
जो हनः सर्वे भन्दा ओम् भैरव
॥ पिप्पला दो वाचः ॥ श्री म
हो सिंह विभवे गरुड ध्वजाय
तापत्र ओषध मनाय ववोष
धाय ॥ कृष्णाय हवि कजला

मि भुजंग रोग ह्ने शवायाय हर
ये गुरु व्येन मले ॥ ५६ ॥ हे गरु
ड ध्वजो मा भया का तापत्र ये
कन फाल्गुना संसार का ओष
ध विद्विजल अग्नि सूर्य रोगई
ने दोष भया का दुःख को नासक
न्याः हे हरिः हे नृ सिंहः हे कृष्ण हे
रुत मा चरणा मान मस्कार गुरु
॥ हवि हो जौ वाचः ॥ कृष्णाय

२८

दीशपदयेकजापिंजरानेअ
 शेवमोवसतुमानसुराजहं
 स॥प्राण॥प्रआरासमेयक
 फवाटपीटेकरठावरोधनवि
 धौस्मररांकुटसे॥५॥आहेक
 स्मत्तमाजावरुपियिंजरामामेरे
 मनैभेगयोःराजहंसत्थाआजिप्र
 वेशहवसुप्राणजान्मावेलामाक
 फवाटायःतलेःकःसठथुनदेता

लोतमास्मरणहवेन॥विदुरुवा
 चः॥हरिणामैवनामैवनामैवः
 नमजीवनं॥कलोनास्तेवना
 स्तेवनास्तेवगतिरंरायथा॥५॥
 मेरेजिवत्यावाटोहरिकोनामे
 द्दहरिकोनामनलियाकलिगु
 गमागतिपतिछेन॥वशिष्टो
 वाचः॥कृष्णैतिमंगलनामयस्य
 वाचिप्रवर्तते॥भस्मीभवतीतस्या

३०
श्रु महापाटक कोटय ॥ ५५ ॥ क
क्षेत्रोत्तमंगल नाम जस्को वच
नहुं छनस्का महापाटक कोस
मूहचांडेन स्महुं छ ॥ अरुंधत्यू
वाचः ॥ कृष्णाय वासुदेवाय हर
ये परमात्मने ॥ प्रणत केशनाद
साय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ५
६ ॥ आ प्रा सरणमा आयाका म
नुष्यकाडुः स्वनाशगन्या यस्ता

की छललाइन मस्कार मर्कु ॥
कश्यपौ वाचः ॥ कृष्णानुस्मरणा
देव पापसंघट पंजरम् ॥ शतधा
भेदमाप्नोति गिरिवज्रहृतो यथा
॥ ५७ ॥ कृष्णका स्मरणा लेयाप
समुह जो छ शये टुका होई जा
छने जसो वज्रलेला या को प
र्वत टुका टुका पार्थीत सै ॥
दुर्योधनौ वाचः ॥ जाना मिध

२५
मं न च मे प्रवृत्तिः जानामि पा
पं न च निवृत्तिः ॥ केनापि देवे
न हृदि स्थितेनः यथा नियुतो
स्मिन् तथा करोमि ॥ ५८ ॥ धर्म
जान्यापन्नि धर्म गर्देनः पापः
जान्यापन्नि पापे गगन्यदनेः
हृदयमारह्यान्ता परमेश्वरले
ज्या भाजा गर्देन सोई होला भ
नि दुर्जोधनले किन्नि गर्दभया

॥ ५९ ॥ पुन दुर्जोधनौ वाचः ॥ यत्र स
गुण दोखेन क्षम्यतां मधुसूद
न ॥ अहमेव महं हंतु मम दोषा
न दीयते ॥ ५९ ॥ हे मधुसूदनः
मेरा गुण दोष क्षमा गरः मयत्र
इति मियत्रै होत स अर्थ लेम
साई दोषना दनु हवसु ॥ ५९ ॥ गुरु
भाचः ॥ ना मे वत वगो विन्दना म
तत्त्व सतर्धिकं ॥ ददात्युचार

३२
गा मुक्ति भवो न यथा गयो गति
॥६०॥ हे गोविन्द तिमि भन्याः
थुलो नमो नामरहे नंदतपो
नाम भनैले मुक्त कनदिन्दु
तिमिलेता अथो गजो गगरी
सका मत्र मुक्ति कनदिन्दुः त
स अर्थ लेत मो नाम वडो रहेछ
॥६१॥ लो मसो वाचः ॥ न मा मि नारा
यरा पाड पंकजः करो मि नारायण

पूज नंसदा ॥ वडा मि नारायण
नाम निर्मलः स्मरण मि नाराय
ण तत्त्व मवेयं ॥६२॥ नारायण
का पाउक मल मान मस्कार गधु
नारायण का पूजा गधुः नारायण
का स्मरण गधु ॥ सोन को वाचः ॥
स्मृते सुकल कल्याण भा जा नेय
त्र जायते ॥ पुरुष स्वव जं नित्यं
व्रजामी सरण हरि ॥६३॥ परमे

३३
श्वर कनसमरुनाले सम्युगा
कल्याणहुंछतसअर्थलेइश्व
शकासरणामाजाहुं॥गर्गाउ
वाचः॥नारायणतिमंत्रोस्ति
वागस्तिवसवर्त्तिनि॥तथापि
नरकेधारेपतित्यवतहुतं
॥६३॥नारायणमन्त्राकापत्र
वचनमावस्थाकोछतसवच
नलेनारायणायोचाराध

रकीमंत्रजपुनसकीनरकमाप
दछनयेतिमंत्रपत्रिसकेनयो
वडेआसर्ज्यछः॥दालभ्यउवा
चः॥किंतस्यवहभिर्नंत्रैभक्ति
स्यजनार्दन॥नमोनारायण
येतिमंत्रसर्वार्थसाधकः॥६४
जस्किभक्तिजनार्दनमाछत
आर्धरेमंत्रलेक्यागनुछः
सम्युगादित्यानारायणयोम

३५
नजनुभेच्छ॥ वैसंयायगो
वाचः॥ अजयोगेश्वरकुलो
यत्रोपाधोधनुर्वरा॥ तत्रभीः
विजयोभुतिधुवानीनिर्मनी
ममः॥ ६५॥ जाहायोगकाईश्व
रकुलोछनजाहाधनुर्धारिअ
जुनछनताहालक्ष्मीपनिछन
जितुपनिसेश्वर्यपनिन्याय
पानितहिछनमेसुद्रिपाय

सोच्छ॥ अंगिराउवाचः॥ हरिह
रतिपायाणिः दुष्टाचनेरयि
स्मृता॥ अनिच्छयापि संपृच्छे
दहस्यवहिपावक॥ ६६॥ ईक्षा
नभैकनहरिभन्यापनिअग्नि
लेजसेपोल्लुद्धरतसे॥ परास
रेवाचः॥ सकुः दुः शरितं येरा
हरिरित्यक्षरदयं॥ वद्वपरिक
रसेजमोक्षायांगमनंप्रति॥

३५

॥६॥ हरिकोइई अक्षरकन
जश्ले भनौ सान्या मनुष्य मोद
क्षलाई जाना कनन यार भयो
भनि जांनु ॥ घोल सन्यो वाचः ॥
हे जिह्वे रस सार सो सर्वदा म
धुर पृथे ॥ गोविन्द नाम पिपु
ष पिब जिह्वे निरंतरं ॥ ६७ ॥
रस जान्या हे जिह्वे वदामि थोगु
लियो रुचा उन्मात्रा रसगुणभ

न्या अमृत कनपि दुन्या मया
शो वाचः ॥ सत्य सत्यं पुन सत्यं
पुन मुत्थाय उच्चान्ये ॥ न वेदा
च परं सास्त्र न देवो केशवार्
परं ॥ ६८ ॥ हे लोक हो सत्य सत्य
महात उथाई कन साचो मंदु
वेद मया ओष्ट अर्को सास्त्र छे
न श्री नारायण मया ओष्ट अ
र्को देवता छे न ॥ धन्यं तरि ह

३५

३६
वाचः॥ अच्युतानन्द गोविन्द
नामोच्चारण भेषजं॥ नश्य
ति सकलं रोगासत्यसत्यव
दाम्यहं॥ ७०॥ हे अच्युत हे अ
नन्त ईना मरुपि औषधकन
जो भनोस्तस्कासम्पूरा रो
गनासुहृद्॥ मार्कण्डे उवाच
॥ साहासिराम हृदिदं साचं ध
जसमुत्कथा॥ यन्मुहुर्नक्षत्राणां

वायिवासुदेवनचिन्तयेत्॥ ७१॥
जश्लेवासुदेवनसन्निभकनरक
मुहुर्नक्षत्राणां जानदिच्छन्ती उ
भागिहो मुखे अंधालोतो अ
नित्यहो जश्लेवासुदेवनं दे
तत्सुखं हो॥ अगस्त्य उवाचः
शिमिषं निमिषार्धं वा प्राणि
नां विशुचिन्तनं॥ ऋदुकोटि
सह आशां ध्याने मे कं वि

शिष्यने॥७२॥एकनिमिष
आछानिमिषमाभयापनि
जश्लेविह्लुकोध्यानगरोस्ता
कोटिहज्जोरजशभन्याध्याने
लेजित्छ॥पुनअगस्त्योवाचः
मनसाकर्मनावाचायस्मरंति
जनादनम्॥तत्रतत्रकुरुक्षत्र
प्रयागोनैमिषवनम्॥७३॥६
मनलेकर्मलेवचनेलेजना
दनजोसमंछताहाकुरुक्षत्र

प्रयागोनैमिषारंगैजाइरह्
॥श्रुकोवाचः॥आलोक्यसर्व
शास्त्राणिविचार्यचपुनःपुन
॥इदमेकसमुत्पन्नंध्येयोनार
यशासदा॥७४॥संपूर्णशास्त्रा
विचारगदामाःश्रीनारायणाके
ध्यानगर्नुभंन्यामहिथहये
॥श्रीमहादेवोवाचः॥सशरेज
मेतेमुनेव्याधिगुप्तकलेव

३८
र॥ औषधं जाह्नविनायं वैश्या
नाशय शोहरि ॥ ७५ ॥ शरिरख
लो भया मा शरिर मा रोग ला
ग्या मा गंगा जल औषधः वैद्य
भन्या काना स्य राई नै को आ
श्रय गर्नु अरु को आ श्रय नग
नु ॥ शौन को वाचः ॥ भोजना
छादने चित्ता दृथा कुर्येति वै
स्मवा ॥ या शौनिश्च भरे देव संभ

तानि मुपेक्षते ॥ ७६ ॥ वै चत
ले आन्या मा दोष न्या भा वरु
मा चित्ता गनु व्यर्थे रुज उरुप
र मे श्वरः संसार कन पालना ग
हृत्ति पर मे श्वर ले भक्त कन
पालना गये न नर कथा ॥ पुनः
शौन को वाचः ॥ सवं वृत्ता दयो
देव ऋषय श्रुत पोषना ॥ किन्ते
यति सुर श्रेष्ठ देव नाशय रा सदा
॥ ७७ ॥ भक्त पो रक्षा गदु भन्य

आदिदेवतापनिविष्णुके
तेनांगद्वेन॥सनत्कुमारोदे
वः॥अथहसोगशचक्रैगुरु
यस्यवाहन॥शंखकरनलेय
स्यसमेविष्णुपुसीदनु॥७८॥
जस्काहातमाग्रदाचक्रैःज
स्काआसनगरुडैःजस्काहा
तमाशंखदण्डैःयस्माविष्णुः
प्रसनहवसुमाविषये॥इदं
विजमायुष्यपूरायज्जयं